www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में ऋषिवर के विचार

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य असत्य अर्थ को प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत होता है, इस लिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

मनुष्य का आत्मा सत्यासत को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

वे आर्य ही थे जो अपने लिए कभी जीते न थे,
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार हित जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट हो कर किस तरह बैठ सकते थे कभी।

–गुप्त जी

यह अंक हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कोष से प्रकाशित किया गया।

अंक : ११३वां विक्रमी सम्वत् २०७३ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११७ जनवरी २०१७

www.thearyasamaj.org

अदरक त्वचा को बनाता है आकर्षक व चमकदार

सर्दियों के मौसम में अदरक की चाय मिले, तो कहना ही क्या। लेकिन चाय समेत हमारे भोजन को जायकेदार बनाने वाला अदरक खूबसूरती को बढ़ाने में भी मददगार साबित होता है। अदरक को आप फल–सब्जी या फिर दवा भी मान सकते हैं।

अदरक के चिकित्सीय गुणों की जानकारी पुरातन चिकित्सा पद्धति में भी आसानी से देखी जा सकती है। ब्लड शुगर को यह नियंत्रित भी करता है, इसके अलावा यह कैंसर जैसी घातक बीमारी के खतरे को भी कम करता है अदरक। आइए हम आपको गुणों से भरपूर अदरक के फायदे के बारे में बताते हैं।

अदरक के गुण : त्वचा को निखारे–अदरक त्वचा को आकर्षक व चमकदार बनाने में मदद करता है। सुबह खाली पेट एक गिलास गुनगुने पानी के साथ अदरक का एक टुकड़ा खाएं। इससे न केवल आपकी त्वचा में निखार आएगा बल्कि आप लम्बे समय तक जवां दिखेंगे।

बीमारियों में रामबाण–दवा के रूप में अदरक का प्रयोग गठिया आर्थराइटिस, साइटिका और गर्दन–रीढ़ की हड्डियों के रोग (सर्वाइकल स्पांडिलाइटिस) में प्रमुखता से किया जाता है। इसके अलावा भूख न लगना, पेचिश, खांसी–जुकाम, शरीर में दर्द के साथ बुखार, कब्ज, कान में दर्द, उल्टी होना, मोच और मासिक धर्म की अनियमितता दूर करने में अदरक का प्रयोग किया जाता है।

कैंसर प्रतिरोधी–अदरक में कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम करने, रक्त का थक्का जमने से रोकने, एंटी–फंगल और कैंसर प्रतिरोधी गुण भी पाए जाते हैं। मार्निंग सिकनेस से निजात अदरक गर्भवती महिलाओं को होने वाली मार्निंग सिकनेस (चक्कर आना, उल्टियाँ होना आदि) से निजात दिलाता है। दर्द मिटाए चुटकी में–अदरक दर्द भगाने की सबसे कारगर दवा है। 'फूड्स दैट फाइट पेन' पुस्तक के लेखक आर्थर नील बर्नार्ड के मुताबिक अदरक में दर्द मिटाने के प्राकृतिक गुण पाए जाते हैं। यह बिना किसी दुष्प्रभाव के दर्दनिवारक दवा की तरह काम करता है।

इसलिए भी खास है अदरक :–पाचन की समस्या होने पर रोजाना सुबह अदरक का एक टुकड़ा खाएं। ऐसा करने से आपको बदहजमी नहीं होगी। इसके अलावा सीने की जलन दूर करने में अदरक मददगार साबित होता है।

अदरक में किसी भी चीज को संरक्षित करने के गुण प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं। शोध के मुताबिक अदरक का सत्व सल्मोनेला नामक जीवाणुओं को खत्म करने में काफी असरकारक है। शरीर में वसा का स्तर कम करने में भी अदरक काफी मददगार है। यदि आपको खांसी के साथ कफ की भी शिकायत है तो रात को सोते समय दूध में अदरक डालकर उबालकर पिएं। यह प्रक्रिया करीब १५ दिनों तक अपनाएं। इससे सीने में जमा कफ आसानी से बाहर निकल आएगा।

साभार : आर्य प्रतिनिधि

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200

आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) (बैंक ब्रांच कोड HPB-325) में भी जमा करवा सकते हैं।

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332
	2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: रामफल सिंह आर्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र. मोबाइल : 94184–77714
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, केयर आफ प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, नरेश चौक, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: श्रवण कुमार, संचालक आर्य वीर दल हि.प्र. मोबाइल : 94184–64977
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला
	2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 89884–12215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक रामफल सिंह आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, सुन्दरनगर कालौनी से प्रकाशित किया।

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

''अन्तर दृष्टिकोण का''

प्रत्येक व्यक्ति का सोचने का, कार्य करने का एक पृथक ढंग होता है और इसका कारण है उसका दृष्टिकोण, क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है और विभिन्न परिस्थितियों में कार्य करता है। इसी के कारण उसकी वृतियों का निर्माण होता है या यूं कहें कि वह अपनी वृतियां बनाता है उसकी मानसिकता बनती है और कार्य का निर्णय करने के लिये उसका दृष्टिकोण बनता है। यह विभिन्नता मनुष्य का गुण और अवगुण दोनों ही हैं। यदि प्रत्येक मनुष्य को जो समाज में रहता है अपने ढंग से कार्य करने की छूट दे दी जाये तो मानव समाज में ऐसी विषमता उत्पन्न हो जायेगी कि सभी का जीवन दूभर हो जायेगा। इसीलिये मानव समाज के संविधान निर्माताओं ने इस बात को बड़ी गम्भीरता से जांचा, परखा और निर्धारण किया उसके लिये कुछ आवश्यक नियमों का जो सभी के लिये अनिवार्यतः पालन करने योग्य हैं, हमारे समाज का जो ढांचा तैयार किया गया उसमें जहां पर सामाजिक नियमों को महत्ता दी गई वहीं पर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं हितों की भी अनदेखी नहीं की गई। वहां पर भी मानव को पूरी स्वतन्त्रता दी गई है। इसीलिये हमारे ऋषियों ने व्यवस्था दी कि 'प्रत्येक मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें। समाज का निर्माण करने की इससे सुन्दर व्यवस्था और कोई हो ही नहीं सकती। यह नियम इतना सशक्त और व्यापक है कि संसार के किसी भी देश में रहने वाले, किसी भी विचारधारा को मानने वाले व्यक्ति को इस पर आपत्ति नहीं हो सकती।

आज समाज में और राष्ट्र में अनेक प्रकार की विचार धारायें पनप रही हैं। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें व्यक्तिगत हितों को, आवश्यकताओं को सर्वोपरि स्थान पर रख कर राष्ट्रीय हितों का बलिदान कर दिया जाता है। उदाहरण के तौर पर हम वर्तमान स्थिति 'नोटबन्दी' पर एक दृष्टिपात करते हैं। पूरा देश इस बात को भली प्रकार से जानता है कि हमारे माननीय प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने यह कार्य कालेधन को नियन्त्रित करने के लिये किया है। पूरे देश के लोगों ने इस समय जिस संयम, धैर्य और उत्साहपूर्वक इस कठिनाई को झेला है वह वास्तव में स्तुत्य है। घण्टों तक बैंकों के सामने लम्बी पंक्ति में बिना किसी आपत्ति के खड़े रहना यह सिद्ध करता है कि लोगों ने इस परिवर्तन को राष्ट्र हित में साधक मान कर अपनाया है। परन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो इस समय अपना एक अलग राग अलापने लगे हैं। आज प्रातः ही (दिनांक १३.१२.१६ को) दूरदर्शन पर समाचारों में अकबरूद्दीन ओबैसी का वक्तव्य देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। ओबैसी यूं तो अपने भड़काऊ भाषणों, ऊटपटांग बयानों के लिये पहले से ही कुख्यात है परन्तु वह इस प्रकार की भाषा बोलकर अपनी प्रतिक्रिया देगा यह तो बिल्कुल समझ से परे की बात है। उनका बयान था कि 'नोटबन्दी' के इस कठिन समय में मुसलमानों की अनदेखी करके उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में ए.टी.एम. एवं बैंक नहीं हैं जिससे मुस्लमानों को भारी कठिनाई आ रही है। सरकार जानबूझ कर ऐसा कर रही है। तरस आता है ऐसे लोगों की बुद्धि पर और ऐसे उत्तरदायित्वहीन वक्तव्यों पर। हम तो इस बात के लिये उनका धन्यवाद करना चाहेंगे कि उन्होंने यह नहीं कहा कि नोटबन्दी का निर्णय केवल मुस्लमानों को परेशान करने के लिये लिया गया है।

मान्य पाठक गण! यह है विचारधारा का या दृष्टिकोण का अन्तर जो हमने अपने इस लेख का शीर्षक बनाया है। ये बातें सिद्ध करती हैं कि वास्तव में उन लोगों के मन में क्या है ? क्या करोड़ों लोग जो प्रतिदिन देश में विभिन्न स्थानों पर स्थित बैंकों की लम्बी पंक्ति में लगते हैं केवल मुस्लमान हैं ? क्या हिन्दुओं या अन्य मतावलम्बियों के घरों में बैंकों द्वारा स्वयं धनराशि पहुँचाई जा रही है और उनमें से एक भी व्यक्ति पंक्ति में नहीं खड़ा है ? क्या बैंक और ए.टी.एम. की स्थापना लोगों का महजब देखकर निश्चित की जाती है ? आश्चर्य! घोर आश्चर्य!! वास्तव में बात यह है कि जिन लोगों की मानसिकता ही दूषित हो चुकी है और जिनका दृष्टिकोण पूर्णतः विकृत है, एकांगी और स्वार्थ से लबालब है वे भला क्या राष्ट्रीय चिन्तन करेंगे और क्या उसके उत्थान में सहयोग देंगे ? प्रत्येक बात को आत्मकेन्द्रित करके, स्वार्थ की राजनीति करने वाले लोग कभी भी राष्ट्र के लिये उपयोगी नहीं हो सकते। कहने को तो स्वतन्त्रता के नाम पर कोई भी कुछ भी बोलने को स्वतन्त्र है। मान लो मेरी किसी व्यक्ति के साथ विचारधारा नहीं मिलती, किसी राजनैतिक पार्टी के साथ मेरा मतभेद है यह एक स्वाभाविक सी बात है। इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, लेकिन देशहित में जो निर्णय लिये जाते हैं क्या उनपर भी मैं अपना व्यक्तिगत मतभेद सर्वोपरि स्थान पर रख कर प्रधानमन्त्री जी को भला बुरा कहूंगा ? श्री नरेन्द्र मोदी जी जब तक बी.जे.पी. के नेता के तौर पर कोई कार्य करते हैं, मैं उनसे चाहे कितना ही मतभेद रखूं कोई अनुचित नहीं है परन्तु जब वे देश के प्रधान मन्त्री के रूप में कोई कार्य करते हैं तो मेरे लिये वे अत्यन्त माननीय और

www.thearyasamaj.org

आदरणीय हैं और एक नागरिक होने के नाते मेरा यह नैतिक कर्त्तव्य भी है कि मैं प्रधान मन्त्री को पूर्ण मान सम्मान की दृष्टि से देखूं। श्री नरेन्द्र मोदी जी जब प्रधान मन्त्री के रूप में कार्य कर रहे हैं तो देश के प्रत्येक व्यक्ति के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहे हैं और हमारे लिये प्रत्येक प्रकार से आदरणीय हैं। यह है स्वस्थ दृष्टिकोण जिसे प्रत्येक देशवासी को अपनाना चाहिये चाहे वह ओबैसी हो, केजरीवाल हो या राहुल गांधी हो।

विपक्ष में बैठे हुए लोग यदि बेकार का अड़ंगा डाल कर संसद की कार्यवाही में बाधा पंहुचाते हैं तो यह किसकी हानि कर रहे हैं? क्या जनता ने उन्हें यह प्रतिनिधित्व इसीलिये सौंपा था कि राष्ट्र के सर्वोच्च संस्थान में बैठकर वे यह कार्य करें। आप विरोध प्रकट कर सकते हैं उसके लिये आपके पास शब्द हैं, सामर्थ्य है, अवसर है परन्तु स्मरण रखना चाहिये कि ऐसा करते समय आपको राष्ट्र के हित को भी सर्वोपरि स्थान पर रखना आवश्यक है। विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता अलग बात है और राष्ट्र हित चिन्तन अलग। स्वतन्त्रता का अर्थ यह कदापि नहीं है कि आप जो चाहे कर सकते हैं या जो चाहे बोल सकते हैं। एक छोटे से छोटे परिवार से लेकर सामाजिक संगठनों, संस्थानों और राष्ट्र संस्थानों के सदस्यों और नेताओं दोनों को यह बात समान रूप से समझने की आवश्यकता है। महत्वपूर्ण यह बात नहीं है कि आप किस क्षेत्र में किस पद पर कार्य कर रहे हैं, महत्वपूर्ण यह है कि आप किस भावना से किस दृष्टिकोण के द्वारा कार्य कर रहे हैं। यदि हमारी निष्ठा राष्ट्रहित में है, संगठन के हित में है या संस्था के हित में है तो फिर कोई कारण नहीं कि हम कभी राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ खड़े दिखाई दें।

यह दृष्टिकोण ही तो था कि आजादी के परवाने हंस–२ कर फांसी का फन्दा अपने गले में डाल रहे थे और दूसरी और विकृत दृष्टिकोण के लोग ईनाम के लोभ से उनकी गतिविधियों का पता तत्कालीन सरकार को दे रहे थे। यह दृष्टिकोण ही तो था कि महर्षि दयानन्द जी महाराज के वचनों से प्रेरित होकर वीरवर लेखराम जी, महात्मा मुन्शीराम जी एवं गुरूदत्त जी, अपना जीवन आहूत कर रहे थे और दूसरी ओर उनके प्राणों के साथ घात करने वाले लोग षड़यन्त्रों में संलग्न थे। यह दृष्टिकोण ही तो है कि एक ओर सीमा पर खड़े हमारे वीर प्रहरी सीमाओं की रक्षा के लिये अपने जीवन का बलिदान कर रहे हैं और दूसरी ओर क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति करने वाले लोग लाशों की राजनीति करने से भी पीछे नहीं हटते। आज स्वतन्त्रता के नाम पर एक भयानक उच्छृखंलता जन्म ले रही है और एक ऐसी विनाशकारी मानसिकता तैयार हो रही है जो येन केन प्रकारेण श्रेष्ठ आदर्शों, श्रेष्ठ परम्पराओं एवं उच्च नैतिक मूल्यों का उपहास उड़ाने में स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती है। आवश्यकता है कि हम स्व को पहचानें और स्व तक उठने के लिये यथासम्भव प्रयास करें क्योंकि मनुष्य का जन्म ईश्वर ने हमें उत्थान के लिये दिया है पतन के लिये नहीं।

उद्यानं ते पुरूषं नावयानम् (अथर्व ८.१.६)

–रामफल सिंह आर्य

स्मृति यज्ञ का आयोजन

दिनांक १२ दिसम्बर २०१६ को श्री राजेन्द्र सिंह सेन की माता जी स्वर्गीय श्रीमती धनदेवी जी की पुण्य स्मृति में यज्ञ का आयोजन उनके घर पर गाँव तमड़ोह, तह. सुन्दरनगर में किया गया। यज्ञ आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष जी रामफल सिंह आर्य द्वारा करवाया गया। यज्ञ में सेन परिवार के सदस्यों समेत काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया। यज्ञोपरान्त श्रीमती रानी आर्या ने एक भजन प्रस्तुत किया और मानव जीवन की सार्थकता पर श्री आर्य जी द्वारा विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया, जिसकी सभी ने प्रशंसा की। सेन परिवार के लोगों ने वैदिक धर्म के मार्ग पर चल कर पाखण्डों से दूर रहने का संकल्प लिया और अपने परिवार में सभी संस्कार वैदिक रीति से करवाने का भी व्रत लिया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने भी यह प्रेरणा ली कि वे भी अपने गृहों पर वैदिक रीति से ही सब कार्यक्रम करवाया करेंगे। इस अवसर पर सेन परिवार की ओर से ११००/– का योगदान आर्यसमाज सुन्दरनगर कालौनी को दिया गया। –सम्पादक

विचार कणिका

- ज्ञान का अर्थ है मौन रहना न कि वाचाल होना।
- समय सब द्रव्यों से अधिक मूल्यवान् है।
- जिस व्यक्ति का नज़रिया निराशाजनक है वह कभी सुखी नहीं हो सकता।
- बिखरा हुआ मन व्यक्ति की अथाह शक्ति को खण्ड–खण्ड कर देता है और एकाग्र मन व्यक्ति को अथाह शक्ति से भर देता है।
- सारा जीवन फूलों पर चलते रहे हो अब यदि रास्ते में कंकड पत्थर तथा कांटे आ गए हैं तो घबराते क्यों हो ? इन्हें भी फूल समझकर पार कर जाओ।
- मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान् बनता है।
- जो वस्तु जहाँ से ली है उसे प्रयोग के बाद उसी स्थान पर रखें।
- दूसरों की इज्ज़त करोगे तो तुम्हारी भी इज्ज़त होगी।

–श्रवण कुमार आर्य, संचालक,
आर्य वीर दल (हि.प्र.)

www.thearyasamaj.org

''पं. चमूपति एम.ए.-आह! वह पावन व्यक्तित्व''

♦रामफल सिंह आर्य

आर्य समाज की वेदी, आर्य समाज रूपी माता की कुक्षि जिन सरस्वती पुत्रों को प्राप्त कर गौरवमयी हुई, धन्य–धन्य हुई उनमें प्रखर मेधा के धनी, विनम्रता और सभ्यता की प्रतिमूर्ति वाणी और लेखनी के जादूगर, महर्षि दयानन्द के प्रति सौ नहीं अपितु दो सौ प्रतिशत समर्पण रखने वाले, गद्य और पद्य दोनों में अगाध गति रखने वाले, अत्यन्त भावुक हृदय, सदाचार एवं सत्यता की सजीव मूर्ति, प्रियदर्शन आचार्य प्रवर पं. चमूपति एम. ए. जी का स्थान बहुत ऊंचा है। यद्यपि उन्हें कार्य करने के लिये बहुत कम समय मिला, मात्र चवालीस वर्ष की अल्पायु में काल के कराल हाथों ने उस महामुनि को हमसे सदैव के लिये छीन लिया तथापि इस अत्यल्प अवधि में वे जो कुछ कार्य कर गये वह हम सब के लिये अनुकरणीय है। आर्य जगत् में यह किंवदन्ती भी रही कि मुनिवर गुरूदत्त विद्यार्थी की आत्मा ने अपना अधूरा कार्य पूरा करने के लिये पं. चमूपति जी एम.ए. के रूप में दूसरा जन्म लिया। यह सत्य है कि आचार्य चमूपति सदृश महामानव प्रत्येक युग में बार–बार जन्म नहीं लेते, ऐसी महान् आत्मायें तो इस धरा पर दुर्लभ ही दृष्टिगोचर होती हैं। तो आईये कुछ जानें अपनी इस विभूति, इस आर्य गौरव, इस ऋषिभक्त के जीवन के बारे में।

रियासत बहावलपुर (अब पाकिस्तान में) श्री दलपतराय जी मेहता के सुपुत्र श्री वसन्दाराम जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती उत्तमी देवी के यहाँ ग्राम खैरपुर टामेवाला में, १५ फरवरी १८९३ को एक पुत्ररत्न ने जन्म लिया। इस बालक का नाम चम्पतराय रखा गया। इस बालक ने बचपन से ही अपने अद्भुत गुणों का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया। पढ़ाई के अतिरिक्त ये बाल–सुलभ मस्ती में भी अपने समवयस्कों के नेता ही रहते थे। इनका मिडल तक का शिक्षण तो जन्म स्थान खैरपुर टामेवाला में ही हुआ तब भी आप अपने अध्यापकवर्ग के प्रिय बने रहे। मिडिल परीक्षा में आपने रियासत में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उसके उपरान्त आपने मैट्रिक परीक्षा पास की और बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रवेश लिया और उस समय कॉलेज से जितने विद्यार्थी यूनिवर्सिटी परीक्षा में बैठे उनमें से सफलता ने केवल आपके चरण ही चूमे। इन्हीं दिनों आपने सिखों के जपुजी साहब का काव्यानुवाद किया। इसकी सभी ने सराहना की। सन् १९११ में आपने एफ.ए. पास कर ली और दो वर्ष तक अहमदपुर शरकिया में स्कूल के द्वितीय अध्यापक रहे। १९१३ में इन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की। सिखी से आप संतुष्ट न हुए तो सिखी को त्याग दिया और साथ ही 'आस्तिकता' को भी। कॉलेज की पढ़ाई के समय आपको लोग श्रृंगार का भी मर्मज्ञ समझते थे और आपका पहनावा एक आदर्श रूप में (Model रूप में) समझा जाता था। जो भी वेशभूषा आप धारण करते वही अगले दिन फैशन बन जाती थी। उनकी वेशभूषा उन दिन अग्रेंजी स्टाईल की थी। कोट, पैन्ट, नेकटाई आदि धारण करते थे। बहावलपुर का एक व्यापारी एक बार कोई ऐसा कपड़ा मंगा बैठा जिसका रंग अच्छा न था, अतः वह कपड़ा बिका नहीं। वेषभूषा का पण्डित उस व्यापारी का मित्र था अर्थात् हमारे चम्पतराय जी उसी के पास से कपड़े खरीदते थे। एक दिन वे उसकी दुकान पर कपड़े खरीदने पहुंचे तो क्या देखते हैं कि वह व्यापारी उदास मुख लिए बैठा है। पूछने पर उसने सारी बात चम्पतराय जी को बता दी। कवि हृदय पसीज गया। उन्होंने वह कपड़ा क्रय कर लिया और उसे ही सिलवा कर तथा डाल कर अगले दिन स्कूल में पढ़ाने चले गये। फिर क्या था? फैशन का आचार्य जो कपड़ा डाले फिरता था, वह लोगों के मन को भला क्यों न भाता। अगले दिन सांयकाल को जब वे उस व्यापारी की दुकान पर गये तो पता चला कि वह कपड़े का पूरा थान हाथों हाथ बिक गया। दुकानदार ने कृतज्ञता दिखाते हुए उन्हें अपना कपड़ा मुफ्त देना चाहा तो पं. जी ने तुरन्त मना कर दिया और आवेश में आकर बोले कि यदि तुमने मुझे रिश्वत देने का प्रयास किया तो मैं अपनी सम्मति इसके विरूद्ध दे दूंगा। दुकानदार ने कपड़े का मूल्य ले लिया।

इसी समय उनको कहीं से स्वामी विवेकानन्द जी के भी ग्रन्थ पढ़ने को मिल गये तो कुछ विवेक जागा किन्तु स्वयं को ब्रह्म समझने लगे फिर विचारों ने पलटा खाया तो मूर्ति में श्रद्धा हो गई। सब कवितायें आदि छूट गई और मूर्तिवत मौन धारण कर लिया। यह मौन टूटा आर्य समाज के प्रबल साहित्य से। चंचल–चित्त जो अब तक कहीं टिकता ही न था यहाँ आकर ऐसा टिका कि फिर कहीं जाने का नाम भी न लिया। ऋषियों के शिरोमणि महर्षि दयानन्द जी महाराज के जीवन ने उन पर ऐसा रंग चढ़ाया कि पिछले कुछ समय से इस कवि हृदय में जो कविता की उमंग दबी पड़ी थी सो 'दयानन्द आनन्द सागर' के रूप में फूट पड़ी। चम्पतराय जी ने अपने आचार्य देव दयानन्द के प्रति एक ऐसा शब्द प्रयोग किया जो मुसलमान केवल अपने पैगम्बर मुहम्मद के लिये सुरक्षित समझते थे। जिस स्टेट में आर्य समाज का नाम लेना भी पाप समझा जाता हो, वहीं पर ऐसा 'कुफ्र' ? इसका परिणाम यह निकला कि आपको एक मुसलमान अधिकारी

www.thearyasamaj.org

ने अपने घर पर बुलाकर क्षमा मांगने के लिये कहा। उसने कहा कि लोग मूर्ख एवं अशिक्षित हैं। उन्हें ऐसी बातों की समझ नहीं है, आप क्षमा याचना कर दो, वे चुप हो जायेगें। चम्पतराय जी ने इसके लिये असमर्थकता प्रकट की। जब ये चलने लगे तो उस अधिकारी ने पुनः कहा कि मैंने आपको यह परामर्श अपने पद के अधिकार से नहीं अपितु अपने व्यक्तिगत विचार से आपको दिया है। मैं आपके परिवार के हित दृष्टि से आपको ऐसा कह रहा था इसमें कोई और हेतु न समझियेगा। चम्पतराय ने उत्तर दिया–''मैं भी आपका कृतज्ञ हूँ। मुझे दुःख है कि आप जैसे हितैषी के इस विचार से सहमत न हो सका।'' इस घटना के समय आप सादिक ईजर्टन कॉलेज में प्रोफेसर थे।

इससे पूर्व की एक घटना का उल्लेख करना और भी आवश्यक है कि बी.ए. तक आपका हिन्दी भाषा से परिचय भी न था परन्तु आर्य समाज से सम्पर्क होने पर आपको संस्कृत भाषा की लौ लग गई आपने निश्चय कर लिया कि एम.ए. की परीक्षा संस्कृत में दूंगा। मित्रों ने बहुत समझाया कि यह क्या कर रहे हो ? तुम्हें हिन्दी भी नहीं आती और तुम एम.ए. संस्कृत में करने की सोच रहे हो। पर धुन के धनी का कोई क्या करे ? लग गई तो लग गई। एम.ए. की परीक्षा संस्कृत में ही दी और बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण भी हुए।

उपरोक्त क्षमा न मांगने वाली घटना से आपको राज्य सेवा से हटा दिया गया और फिर राज्य को छोड़ देने का भी आदेश दे दिया गया। उसके उपरान्त आप पंजाब चले आये और स्वामी श्रद्धानन्द जी से सम्पर्क हुआ। इस समय आपका नाम चम्पतराय से 'चमूपति' हो चुका था। पण्डित जी दो वर्ष तक मुलतान में रहकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में कार्य करने के लिये लाहौर आ गये। सभा उस समय तक 'दयानन्द सेवा सदन' की स्थापना कर चुकी थी। उसका सदस्य बनने वालों को दीक्षा लेनी पड़ती थी। श्री स्वामी स्वतन्त्रता जी महाराज उन्हीं दिनों अफ्रीका से वापस लौटे थे, उन्होंने पण्डित जी को दीक्षा दी। इस पर पं. जी ने कहा–''इससे पूर्व मैं सोच समझ कर अपनी बुद्धि से स्वतन्त्रता पूर्वक कार्य किया करता था, आज मैंने अपनी वह स्वतन्त्रता आर्य प्रतिनिधि सभा को अर्पण कर दी है। अब मैं वही करूंगा जो सभा कहेगी। अब मैं अपने लिए कुछ न सोचूंगा। पं. जी ने अपनी इस प्रतिज्ञा को आजीवन खूब निभाया। सभा ने इनको 'वैदिक मैगजीन' और 'आर्य' इन दो पत्रों के सम्पादन का कार्य दिया। इन दोनों पत्रों का सम्पादन पं. जी ने बहुत योग्यता और परिश्रम से किया। यद्यपि वैदिक मैगजीन पर प्रो. रामदेव का नाम सम्पादक के स्थान पर छपता था परन्तु कार्य पं. जी किया करते थे। उन्होंने कभी नाम की कामना न की। सभा ने इन्हें प्रचारार्थ अफ्रीका में भेजा। वहाँ इनके व्याख्यानों की धूम मच गई। सभा में आने के उपरान्त पण्डित जी ने कवितायें लिखनी प्रारम्भ की। इनकी कवितायें बहुत ऊंची श्रेणी की हुआ करती थी। इनकी कविताओं की प्रंशसा उस समय दिग्गज कवि भी किया करते थे। श्री पं. पद्मसिंह शर्मा जी जैसे कवि इनकी कविताओं की तुलना महाकवि गालिब के साथ किया करते थे। पं. नाथू राम 'शंकर' तथा डॉ. इकबाल जैसे लोग भी इनके प्रशंसक थे। अफ्रीका से वापिस आने के कुछ काल पश्चात् सभा ने उन्हें गुरूकुल कांगड़ी में भेज दिया। वहाँ वे पहले उपाध्याय, फिर मुख्याधिष्ठाता और उसके पश्चात् आचार्य बन गये। गुरूकुल से उन्हें फिर लाहौर बुलाया गया। यहाँ इनको 'सत्यार्थ प्रकाश' का अनुवाद करने का कार्य सौंपा गया। उसी समय आपका स्वास्थ्य बिगड़ गया और १५ जून १९३७ को मात्र चवालीस वर्ष में ही निधन हो गया। समस्त आर्य जगत् में शोक की एक लहर दौड़ गई। आर्य समाज की एक अपूरणीय क्षति हुई।

पं. चमूपति जी का जीवन वास्तव में वेद और ऋषि दयानन्द को समर्पित था। वे बच्चों से बहुत स्नेह करते थे। उनकी क्रीड़ा उन्हें बहुत अच्छी लगती थी। आर्य समाज के इतिहास के मर्मज्ञ श्रीयुत् राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने अपनी पुस्तक 'कविर्मनिषि पं. चमूपति' के पृष्ठ ५५ पर लिखा है कि पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जैसे दिग्गज विद्वान् ने भी श्री पंडित चमूपति जी के चरण स्पर्श किये। वे लिखते हैं : ''श्री पण्डित बुद्धदेव विद्यालंकार वेद के सर्वश्रेष्ठ विद्वानों में से एक थे। आपने पं. चमूपति जी के निधन के बाद अपना एक संस्मरण स्वामी दीक्षानन्द जी (तब आचार्य कृष्ण थे) को सुनाया आपने कहा कि एक बार पं. श्री चमूपति जी वेद की प्रसिद्ध ऋचा ''ब्रह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाह् राजन्यः कृतः' की व्याख्या कर रहे थे तो कहा कि ब्राह्मण मुख है किसका ? परमात्मा का। क्षत्रिय भुजा हैं। किसकी ? परमात्मा की। वैश्य धड़ है। किसका ? परमात्मा का। शूद्र पांव हैं। किसके ? परमात्मा के। ये परमात्मा के मुख, भुजा व धड़ कैसे हुए ? इसको स्पष्ट करते हुए आचार्य चमूपति जी ने कहा कि जब ब्राह्मण अपनी बात न कहकर परमात्मा की वेदवाणी का सन्देश सुनाता है, सत्य ही बोलता है तो वह परमात्मा का मुख बनकर बोलता है। जब क्षत्रिय अन्याय के विरूद्ध लड़ता है परमात्मा का युद्ध करता है। प्रयोजन अपना नहीं परमात्मा का है तो वह परमेश्वर की भुजा बनकर लड़ता है। ऐसे ही वैश्य अपना कर्म स्वार्थ रहित होकर करे और शूद्र भी परमेश्वर की सेवा समझ कर सेवा करें तो इस दृष्टि से सृष्टि ही नई बन जावे। जब अपनी अनूठी शैली में पं. चमूपति जी ने वेद का यह मर्म

www.thearyasamaj.org

खोला तो वेद के दीवाने पं. बुद्धदेव जी ने प्रवचन समाप्त होते ही पं. चमूपति जी के चरण छू लिये। आपके मन व मस्तिष्क ने यह साक्षी दी कि यह विद्वान् तो परमदेव की एक विशेष देन है। यह कोई सामान्य पुरूष नहीं प्रत्युत ऐसी विभूति है जिसने युगों के पश्चात् धरती पर जन्म लेकर इस भारत भू को गौरवान्वित किया है।''

पाठक गण! यह थी पं. चमूपति जी की शैली जिसमें गहन चिन्तन का, ऊंचे दर्शन का, वेद के प्रति अगाध निष्ठा का भाव था। इसी भाव ने उन्हें सामान्य जनों एवं विद्वानों दोनों का आदरणीय बना दिया था। महर्षि के प्रति उनकी जो श्रद्धा थी उसका हम जैसे क्षुद्र जीव क्या मूल्याकंन करेंगे। स्वयं उनकी कविता उसका वर्णन कर रही है। यह कविता दण्डी गुरू विरजानन्द जी की कुटिया को लक्ष्य करके कभी उन्होंने लिखी थी। आप भी इसका रसास्वादन कीजिये। पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज इसको सुनाते समय स्वयं भी रोया करते थे और दूसरों को भी रूला देते थे।

जय जय जय ऋषि प्रसव सुहागिन।
कुटि मुनि अनुरागिन, बड़ भागिन।
किस दिन की स्मृति उर धारे,
खड़ी–वियोग विकल वैरागिन ?
वे ऋषि बन जग पाप झाड़ते,
तुझे फंसाती ममता नागिन।
धर्म मेघ बन बरस रहे वे,
सरित स्नान की तू अनुरागिन।
दण्ड़ी गुरू की कड़ी कचहरी,
बे अघ ताड़ बनी अपराधिन।
लौटा दी लौंगों की थाली,
लोभिन कहूं तुझे या त्यागिन।
मुग्ध खड़ी किन खंडहरों पर,
अति अनुरागिन, अति वैरागिन।
लाखों झुक–झुक शीश नवाते,
मैया तेरी कोख सुहागिन।
गौरव गीत गुंजाती गलियां,
मथुरा रति राती रस रागिन।

इस कविता के भावों का तो कोई काव्य रस का पारखी ही आनन्द उठा सकता है। हम तो केवल इसके रचयिता के चरणों में शीश ही धर सकते हैं।

पं. जी ने जो पुस्तकें लिखी हैं उनको हम सब पढ़ें विचारें और उन्हें जानने का प्रयास करें तो पता चलेगा कि हमारे विद्वान् किस श्रेणी के हुआ करते थे जिनका लोहा उनके विरोधी भी मानते थे।

उनकी पुस्तकों की एक सूची हम यहाँ दे रहे हैं जिससे कि पाठकों को उनका संग्रह करना सरल हो जाये :–

उर्दू : १. दयानन्द आनन्द सागर, २. भारत की भेंट, ३. हिन्दुस्तान की कहानी, ४. गौ माता की लोरी, ५. मरसिया ए–गोखले, ६. समाज और हम, ७. तालीमी ट्रैक्ट, ८. छू–मन्त्र, ९. काक भुसुण्ड़ी का लैक्चर, १०. जवाहरे जावेद, ११. चौदहवीं का चांद, १२. परमात्मा का स्वरूप, १३. गंगा तरंग, १४. वैराग्य शतक का पद्यानुवाद, १५. नारा–ए–तौहीद, १६. मजहब का मकसद, १७. सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद (१–१० सम्मुलास)।

हिन्दी : १. सन्ध्या रहस्य, २. हमारे स्वामी, ३. वृक्षों का आत्मा, ४. वैदिक दर्शन, ५ योगेश्वर कृष्ण, ६. सोम सरोवर, ७. जीवन ज्योति, ८. देव यज्ञ, ९. आर्य प्रतिनिधि सभा का इतिहास, १०. यास्क युग।

अंग्रेजी : 1. Ten Commandments of Dayananda, 2. Glimpses of Dayananda, 3. Translation of Yajurveda (1-10 Chapters) 4. Mahatma Gandhi and the Arya Samaj.

सन्दर्भ ग्रन्थ रघुवीर सिंह भारतेन्द्र नाथ द्वारा लिखित जीवन ज्योति, राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा लिखित कविर्मनिषि पं. चमूपति।

डॉ. धर्मवीर गए

जिन क्षेत्रों में आर्य समाज शिथिल था सपने टूट रहे थे।
धर्मवीर जी के उपदेशों से अब वहाँ अंकुर फूट रहे थे।।
समाचार मिला ये दुःखद अचानक कि जहाँ से धर्मवीर गये।
ये शब्द सुने जिस आर्य ने उसका ही कलेजा चीर गये।।
परोपकारिणी सभा में छटा बिखेरी ज्योत्सनापुंज चमत्कारी थे।
उत्तराधिकारिणी सभा में ऋषि के सच में उत्तराधिकारी थे।।
आर्य समाज का यशस्वी योद्धा महाविद्वान् रणधीर गया।
दयानन्द के तरकश में से मानो एक अमूल्य तीर गया।।
देह चली गई तो क्या, घुल गये हो सबकी आवाजों में।
हे धर्मवीर! तुम रहोगे ज़िन्दा हर जगह आर्य समाजों में।।

–आनन्द प्रकाश आर्य, हरियाणा

आर्य प्रतिनिधि हिमाचल का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का चुनाव दिनांक १८ दिसम्बर २०१६ को आर्य समाज बिलासपुर में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से निम्मलिखित पदाधिकारी चुने गये। सर्व श्री प्रबोध चन्द्र सूद जी–प्रधान, रामफल सिंह आर्य जी–वरिष्ठ उपप्रधान, विद्या निधि शास्त्री जी–उप–प्रधान, कर्म सिंह जी–महामन्त्री, शेष कार्यकारिणी के गठन का अधिकार प्रधान जी को दिया गया जिसकी घोषणा शीघ्र ही कर दी जायेगी।

–सम्पादक

www.thearyasamaj.org

देव दयानन्द शरणं गच्छामि

♦अभिमन्यु कुमार खुल्लर, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०)

ब्रह्मानन्द, सच्चिदानन्द के संसर्ग में मोक्षानन्द रसपान करती हुई महर्षि दयानन्द की आत्मा से सम्पर्क की मेरी अभिलाषा दिन व दिन बलवती होती गई सम्पर्क करने का कोई उपाय न देखकर कम्प्यूटर का ध्यान आया। गूगल पर सब जानकारी मिल जाती है। पर वीडियो कान्फ्रेसिंग के लिये महर्षि दयानन्द उपलब्ध नहीं हो सकेंगे। मैं तो उनसे आमने–सामने बात करना चाहता हूँ। केवल उनसे ही। संकट में उन्हीं ने मुझे डाल रखा है।

कुछ समय परेशान रहा। अचानक मस्तिष्क ने सूचना दी कि कल्पनालोक में 'महर्षि दयानन्द' से बात की जा सकती है। क्षणभर में ही महर्षि और मैं आमने सामने। महर्षि से कहा आपने बड़े संकट में डाल दिया है ?

महर्षि ने कहा–कैसे ?

मैं : आपके बताये ईश्वर के उन्नीस गुण–तत्वों। मानदण्डों में से केवल दो गुणतत्वों–निराकार और सर्वव्यापक से मुझे सर्वाधिक आपत्ति है।

महर्षि : इन दो गुणों से ही क्यों ?

मैं : इन दो गुणों के कारण ही आप द्वारा समर्थित ईश्वर के लिये संभव हो पाया है कि वह इस पृथ्वी लोक में ही नहीं, अपितु अनन्त ब्रह्माण्ड के कण–कण में समाया हुआ है।

महर्षि : ठीक–ठीक समझा तुमने।

मैं : आपका ईश्वर समस्त चेतन जगत् में, मानव/जीवात्मा के कर्मों का ही नियामक है, अन्य जीवों का नहीं। कर्म के अनुसार ही पक्षपात रहित न्याय से फल–सुख–दुःख देता है। यह क्रम एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है। जब तक जीवात्मा मोक्ष को न प्राप्त कर लें। मोक्ष का रास्ता बड़ा कठिन–टेढ़ा है। आप यह भी मानते हैं कि ईश्वर की पूजा सर्वमान्य प्रचलित रूप में नहीं की जाती। उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जानी चाहिये। यही नहीं, उसके गुण, कर्म और स्वभाव अपनाकर अपना चरित्र सुधारना चाहिये अन्यथा उसकी स्तुति, प्रार्थना और उपासना का कोई लाभ नहीं।

महर्षि : बहुत ठीक समझा तुमने।

मैं : बस, बहुत हो चुका। बहुत कठिन है आपके ईश्वर को साधना। मुझे आपका ईश्वर स्वीकार नहीं।

महर्षि : ठीक है। संस्कृत में 'धातु' से शब्दार्थ ग्रहण किया जाता है। अतः समस्त सृष्टि का निर्माण करने से 'ब्रह्मा', सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु' कल्याण अर्थात् सुख देने वाला होने से उस परमात्मा को 'शिव' कहते हैं। ये तीनों विशेषण एक ही परमात्मा के हैं।

पुराण प्रतिपादित ब्रह्मा, विष्णु, शिव के ईश्वर परक अर्थ किये जाऐं तो तीन ईश्वर सिद्ध होते हैं जबकि ईश्वर एक ही है। ब्रह्मा की पूजा साधारणतया प्रचलन में नहीं है। पुष्कर–राजस्थान में उसका एक ही मंदिर है। शिव की पूजा नहीं होती। योनि आकार के पात्र में स्थापित शिवलिंग की पूजा होती है। क्या तुम शिवलिंग की पूजा ईश्वर मानकर करोगे ?

मैं : मेरा दिमाग घूम गया। चुप हो गया।

महर्षि : अधिकांशतः विष्णु की पूजा प्रचलन में नहीं है। उनके अवतारों की पूजा होती है। अवतार होने से ईश्वर 'अजन्मा' और 'अमर' नहीं हो सकता। सब जानते हैं अवतारों/महापुरूषों का जन्म हुआ ओर उनका स्वर्गवास भी हुआ। तुम उनके अवतारों की पूजा करोगे ?

मैं : हाँ।

महर्षि : उनकी पत्नी, बच्चों और सेवक की भी ?

मैं : आपका इशारा समझ रहा हूँ। श्रीराम भगवान हैं, सीता माता हैं और दास भाव में सेवा करने वाला हनुमान जी हैं। इन तीनों की पूजा–अर्चना करूंगा।

महर्षि : क्या इनकी पूजा पृथक–पृथक ईश्वर मानकर करोगे या इनमें एक ही ईश्वर हैं, ऐसा मानकर करोगे।

मैं : जिसकी मूर्ति के सामने खड़े होकर पूजा करते हैं, उसी में ईश्वर भाव रखकर पूजा की जाती है।

महर्षि : भागवत् के माखन चुराने वाले, गोपियों के साथ रास–लीला करने वाले श्री कृष्ण की भी तुम पूजा करोगे ?

मैं : श्री कृष्ण की पूजा का सर्वाधिक प्रचलित रूप यही तो है।

महर्षि : यह तो विष्णु के दो अवतारों की बात हुई। अभी बाईस अवतार और हैं। पौराणिक ३३ करोड़ देवता मानते हैं। उनकी पूजा के लिये तुम्हें करोड़ो बार जन्म लेना पड़ेगा और मरना पड़ेगा।

मैं : आप डरा रहे हैं।

महर्षि : नहीं। मैं तो तुम्हारे ईश्वरों–देवताओं का परिचय करा रहा हूँ। अच्छा, यह बताओ कि इनमें से किसी एक ही ईश्वर की पूजा क्यों न करोगे ?

मैं : इसलिये कि यदि एक देवता प्रसन्न न हो तो दूसरा और दूसरा नहीं तो तीसरा कोई न कोई तो पिघलेगा। मेरा काम बन जाएगा।

महर्षि : क्या काम बन जाएगा ?

मैं : मुकद्दमा जीत जाऊँगा।

www.thearyasamaj.org

महर्षि : किससे मुकद्दमा जीत जाओगे ?

मैं : बड़े भाई से।

महर्षि : क्या दशरथ पुत्र भरत ने श्री रामचन्द्रजी के विरूद्ध मुकद्दमा जीत कर अयोध्या का राज्य प्राप्त किया था ?

मैं : चकरा गया। कोई उत्तर नहीं था। मौन साध गया।

महर्षि : इन देवी देवताओं के अतिरिक्त पुट्टापार्थी के सांई बाबा (अब स्वर्गवासी) शिरड़ी के सांई, आसाराम और कबीर पंथी रामपाल (दानों जेल में हैं; और उनकी जमानत भी नहीं हो रही।) इनकी भी पूजा ईश्वर मानकर करोगे यदि तुम्हारी मनोकामना पूर्ण नहीं हुई तो।

मैं : कब्र में मृत अवस्था में पड़ा कोई पीर–फकीर भी ?

मैं : बिल्कुल

महर्षि के इन प्रश्नों से मस्तिष्क में धुंधलका छाने लगा था। दिमाग गरम हो चला था। अन्दर ही अन्दर व्याकुलता बढ़ने लगी थी। इतने में ही महर्षि ने अगला प्रश्न दाग दिया–पता है पण्डे, पुजारी, महंत मनोकामना पूरी न होने पर क्या कहते हैं ?

मैं : हाँ पता है। ज्यातिषियों के पास भेजते हैं जो ग्रह नक्षत्रों के विकट जाल में फंसा देते हैं। ग्रह–नक्षत्रों की बाधा पार करने के लिये व्रत, उपवास, पूजा आदि कराते हैं। जमकर दान–दक्षिण लेते हैं। फिर भी यदि मनोकामना पूरी नहीं होती तो 'भाग्य' का लिखा बताते हैं।

महर्षि : इसके अतिरिक्त, परिवार में मृत्यु होने पर 'तेहरवीं का भोज, गया (बिहार) में पिण्डदान, प्रतिवर्ष श्राद्ध आदि भी करना पड़ेगा।

अब तक मेरा धैर्य टूट चुका था।

मेरी मनोदशा को भांप कर महर्षि ने कहा वत्स! सच्चे ईश्वर की खोज की कामना चौदह वर्ष की आयु में हुई। २१ वर्ष की आयु में गृहत्याग के पश्चात् चौदह वर्ष तक रात–दिन एक की सच्चे ईश्वर की खोज में, साधु संन्यासियों के पास समस्त भारत में भटकता रहा। तुम एक ही वार्तालाप में, थोड़े से उद्धाटन से ही घबरा गए। वेद सम्मत ईश्वर कोई उल्टी सीधी मनोकामना पूरी नहीं करता। मुकद्दमा नहीं जिताता। चोरी–चपाटी, अपहरण, बलात्कार, भ्रष्टाचार में सहायता नहीं करता। वह पुरूषार्थी–परिश्रमी, मेहनती सदाचारी मनुष्य बनने की प्रेरणा करता है। सत्कर्म करने की आज्ञा करता है। ऐसे मानव की वह पूरी–पूरी सहायता करता है। कष्ट पड़ने पर वह राह दिखाता है।

हे महर्षि! आपने सही कहा। देव दयानन्द शरणं गच्छामि।

गायत्री मन्त्र का अर्थ चिन्तन

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

गायत्री मन्त्र : ओं भूर्भूवः स्वः। तत् सवितुवरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्।

वेदों में कई छन्द हैं। यह मन्त्र गायत्री छन्द से होने के कारण गायत्री मन्त्र कहलाता है। इसमें २४ अक्षर हैं तथा ६ शब्द हैं। यह मन्त्र तीन पदों में विभक्त है। इसे गुरू मन्त्र भी कहा जाता है। विचार करने पर मन्त्र में तीन तथ्य सामने आते हैं।

१. ईश्वर का दिव्य चिन्तन करना चाहिये।

२. उस परमेश्वर को अपने अन्दर धारण करना चाहिये।

३. सद्बुद्धि के लिये प्रार्थना करनी चाहिए।

ईश्वर का दिव्य चिन्तन इसलिये आवश्यक है कि प्रभु के सभी सद्गुण और विशेषतायें हम में प्रकट हों। इससे हमारी आत्मिक तथा भौतिक जीवन उन्नति की ओर अग्रसर हो।

दूसरे भाग में भगवान को अपने अन्दर धारण करने की प्रतिज्ञा है जिससे आनन्द की प्राप्ति होती है। तीसरे भाग में प्रार्थना की गई है कि वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें। सद्बुद्धि का जीवन में सर्वोपरी महत्व है। सद्बुद्धि द्वारा ही सब सुख सम्पदायें प्राप्त होती हैं। गायत्री मन्त्र से शिक्षा मिलती है कि बुद्धि को सात्विक बनाओ। आदर्शों को ऊंचा रखो। उच्च विचार धारा में रमण करो। इसी से आनन्द की अनुभूति होगी।

मन्त्र का शब्दार्थ : ओं (परमेश्वर) भूः (प्राण स्वरूप), भवः (सुख स्वरूप) तत (उस) सवितुः (तेजस्वी) वरेणयम् (श्रेष्ठ, वरण योग्य) भर्गो (पापनाशक) देवस्य (दिव्य गुणों से युक्त का) धीमहि (ध्यान करते हैं) यः (जो) नः (हमारी) धियो (बुद्धियों को) प्रचोदयात् (सन्मार्ग में प्रेरित करे।)

भावार्थ : उस प्राण स्वरूप, दुःख विनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा का हम ध्यान करते हैं। वह हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करे।

नारी का सम्मान करो

लड़की पैदा हो जाने पर,
घर में मातम सा छा जाता है,
लड़का यदि जन्म लेता,
घर खुशियाँ से भर जाता है।
लड़की का पालन पोषण भी,
लापरवाही से होता है।
लड़का शीघ्र जवाँ हो जाये,
ध्यान विशेष दिया जाता है।
अरे! लड़की को लड़का समझो,
उसे पढ़ाओ योग्य बनाओ।
नारी नर की खान है,
नारी का सम्मान करो। –देवराज आर्य मित्र, नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

लौह पुरूष
(१५ दिसम्बर, पुण्य तिथि)

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

अरब सागर के छोर पर स्थित योगीराज श्री कृष्ण की कर्मस्थली द्वारिका, मोहन दास कर्म चन्द गान्धी जिन्हें सारा संसार महात्मा गान्धी के नाम से जानता है। आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के भाष्यकार एवं सत्यव्रती महर्षि स्वामी दयानन्द, विक्रम सारा भाई, जहांगीर रत्न जी दादा भाई टाटा, विक्रम सारा भाई, अजीम प्रेम जी, धीरू भाई अम्बानी, होमी भाभा, दादा भाई नरोजी, पूर्व प्रधान मन्त्री मोरार जी देसाई आदि महान् विभूतियों की जन्मस्थली गुजरात प्रांत जिसे 'दिव्य धरा' के नाम की संज्ञा देना अतिश्योक्ति न होगा। भारत के प्रतिभावान, कर्मठ एवं अद्भुत व्यक्तित्व के स्वामी वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का जन्म भी इस प्रान्त में हुआ। इसी दिव्यधरा में स्वतन्त्र भारत के प्रथम गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल जिन्हें 'लौह पुरूष' के नाम से सम्बोधित किया जाता है की जन्मभूमि भी गुजरात ही है। 'लौह पुरूष' एक ऐसा शब्द है जिससे प्रायः यह धारणा बनती है कि ऐसा व्यक्तित्व जो लोहे के समान कठोर होगा और सरदार पटेल दिखाई भी ऐसे ही देते थे। देखने में वे एक शुष्क से और कठोर से व्यक्तित्व के लगते थे परन्तु भीतर से वे नारियल के समान थे जो ऊपर से एकदम कठोर होता है और अन्दर से बिल्कुल कोमल। देश को स्वतन्त्र कराने में उनका अमूल्य योगदान रहा है। देश की स्वतन्त्रता के लिए बारदोली सत्याग्रह के अवसर पर उन्होंने कुशल नेतृत्व में विशाल संख्या में लोगों को संगठित किया जिसके कारण उनको 'सरदार' नाम दिया गया जो तत्कालिक परिस्थितियों के दृष्टिगत एक कठिनतम कार्य था किन्तु वे अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहे और अपने कार्य में सफलता पायी। अपने इन्हीं इरादों के कारण वे 'लौह पुरूष' कहलाये। सरदार पटेल पर छत्रपति शिवाजी और स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरूषों की अमिट छाप थी। उनकी कार्यप्रणाली की तुलना विश्व के महान् राजनीतिज्ञ जैसे ब्रिटेन के बिस्टन चर्चिल, अमरीका के आइजनहावर, रूस के ख्रुश्चेव, चीन के चाऊ–एन–लाई से की जा सकती है। उनके हृदय की कोमलता का श्रेष्ठतम उदाहरण खेड़ा के बाढ़ग्रस्त इलाकों में देखा गया जहाँ पर लोग चारों ओर से बाढ़ के पानी में घिरे हुए त्राहि–त्राहि कर रहे थे। वहाँ जाकर उन्होंने तन–मन–धन से निस्वार्थ भाव से बाढ़ पीड़ित लोगों की सेवा की। वहाँ उन्होंने शरणार्थियों के लिए कैम्प, भोजन, पानी आदि की व्यवस्था की और बड़ी कुशलता के साथ उनकी सहायता के लिए स्वयंसेवियों की बहुत बड़ी फौज बना दी। सरदार वल्लभ भाई पटेल का जीवन बहुत सादगी भरा था। उनका बचपन गुजरात के नाडियाड में बीता। वे गरीबी से भली भान्ति परिचित थे। अपने जीवनकाल में वे अपने रहने के लिए एक मकान तक नही बना पाये। वे अहमदाबाद में एक किराये के मकान में रहा करते थे। सन्तान के रूप में उन एक पुत्र दहया और पुत्री मणिबेन थी। उनकी सादगी का इससे उत्तम उदाहरण अन्य कोई और नहीं हो सकता कि जिस समय उनका देहावसान हुआ उनके बैंक खाते में मात्र दो सौ आठ रूपऐ थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई, फिर लंदन जाकर इन्होंने वकालत की पढ़ाई पूरी की। उसके पश्चात् अहमदाबाद में रहकर वकालत करने लगे। इनके जीवन की घटना है कि एक बार सरदार पटेल अदालत में खड़े हुए किसी केस पर बहस कर रहे थे। तभी उनके किसी निकट सम्बन्धी ने उनके पास आकर उनके कान में कुछ कहा और एक कागज़ हाथ में दे दिया। उन्होंने वह कागज़ खोलकर देखा, पलभर को तो वे ठिठके, फिर कागज़ को मोड़ कर जेब में रख लिया और बहस में लग गये जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। दो घंटे की बहस के बाद उन्होंने मुकदमा जीत लिया। उसके बाद उनकी आंखों से आंसू निकल आये। जब न्यायधीश, वकीलों व अन्य लोगों ने उनसे इस विषय में पूछताछ की तो उन्होंने ने उनकी पत्नी के निधन के बारे बताया। इस पर उनसे अपने मुकदमे को न छोड़ने का कारण पूछा गया तो वे बोले कि उस समय तो मैं अपना फर्ज़ निभा रहा था जिसकी मेरे मुवक्किल ने फीस दी थी। मैं उसके साथ अन्याय कैसे कर सकता था ? ऐसे ही कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ निश्चयी पुरूष ही 'लौहपुरूष' बना करते हैं और विश्व में ख्याति अर्जित करते हैं। १९२० में उन्हें गुजरात कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष चुना गया और तब से वे १९४५ तक इसके अध्यक्ष रहे। गांधी जी के असयोग आन्दोलन में उन्होंने लगभग तीन लाख लोगों की भागीदारी सुनिश्चित की और इसके लिए उस समय लगभग डेढ़ करोड़ रूपऐ का चन्दा एकत्र किया। यही काल था जब उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और अपने पुत्र और पुत्री सहित खादी को अपनाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् केन्द्रिय मन्त्रिमण्डल में वल्लभभाई पटेल को गृहमन्त्री का पद सौंपा गया। उस समय देश में ५६५ देशी छोटी–बड़ी रियासतों का अलग–अलग प्रभुत्व था। जब भारतीय संविधान तैयार किया जा रहा था तो गृहमन्त्री ने समस्त छोटी–बड़ी रियासतों के जमीदारों, राजा–महाराजाओं से भारत के संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने का कहा तो अधिकांश राजा–महाराजाओं ने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये रखने का निर्णय लिया जो देश की

www.thearyasamaj.org

अखण्डता के विपरीत था। हैदराबाद के निजाम ने स्पष्ट रूप से कहा कि मैं अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के लिए स्वतन्त्र हूँ। इस पर मन्त्रिमण्डल में गहनता से विचार हुआ और सरदार पटेल की कूटनीति, विवेक और राजनैतिक कौशल के सम्मुख समस्त जमीदारों, राजा–रजवाड़ों को झुकना पड़ा। निजाम हैदराबाद के विरूद्ध सैनिक कार्यवाही अवश्य करनी पड़ी। इसके लिए समस्त देशवासियों ने सरदार पटेल की भूरि–भूरि प्रशंसा की। देश की उत्तरी सीमा पर स्थित जम्मू–कश्मीर के लिए सरदार पटेल अपनी आखिरी सांसों तक जूझते रहे। सरदार पटेल के असामयिक अवसान के कारण यह निर्णय नहीं हो सका। गृहमन्त्री के नाते सरदार पटेल ने पाकिस्तान से आये हुए लाखों शरणार्थियों के पुनर्वास और भारत–पाक के अनेक विवादों का निपटारा भी बहुत ही सूझाबूझ ओर साहस से किया।

सोमनाथ मन्दिर के जीर्णोद्वार में भी उनकी प्रमुख भूमिका रही। सरदार पटेल वास्तव में कर्मयोगी पुरूष थे और मद्भगवत गीता के सच्चे उपासक थे। पिचहत्तर वर्ष की आयु में १५ दिसम्बर १९५० को मुम्बई में उनका निधन हो गया। 'लौह पुरूष' सरदार पटेल भारतीय इतिहास में अविस्मरणीय रहेंगे। आज देश ऐसे महापुरूष को शत–शत नमन करता है।

''बहु-आयामी व्यक्तित्त्व-स्वामी श्रद्धानन्द जी''

♦आर्या भारती, हिसार, हरियाणा

आर्य समाज की बलिदानी परम्परा में जिन वीर पुरूषों का नाम अग्रिम पंक्ति में आता है उनमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्थान बहुत ऊंचा है। आज जब आर्यजन उनका नाम लेते हैं तो गर्व से मस्तक ऊंचा उठ जाता है। जब युवक मुंशीराम की तुलना स्वामी श्रद्धानन्द जी से करते हैं तो परिवर्तन की एक ऐसी श्रृंखला दिखाई देती है जो एक बिगड़ैल युवक को मानवता के शीर्ष स्थान पर ले जाकर स्थापित कर देती है। संसार में कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनपर किसी राजनैतिक पार्टी या उनके अनुयाईयों द्वारा महानता थोपी जाती है परन्तु कुछ विरले व्यक्ति ऐसे होते हैं कि उनके कर्मों के कारण प्रसिद्धि, महानता उनके चरणों की दासी बन कर उनके पीछे–२ घूमती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उन्हीं में से एक हैं। नास्तिक, स्वेच्छाचारी एवं बिगड़े युवक मुंशीराम को न तो उनके पिता श्री नानकचन्द जी सन्मार्ग पर ला सके, न उनकी पत्नी और न ही कोई विचारक या गुरू। प्रथम बार जब उन्होंने बरेली में अपने पिता जी के आदेशानुसार महर्षि दयानन्द जी महाराज के दर्शन किये, उनके विचारों को सुना, विचारा तो मन में एक उथल–पुथल उत्पन्न हो गई। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त वह युवक यह जानकर आश्चर्य में पड़ गया कि बिना अंग्रेज़ी जानने वाला यह सन्यासी जो कि केवल संस्कृत या हिन्दी ही जानता है किस प्रकार से इतनी ऊंची योग्यता के साथ इतनी विलक्षण बातें करता है। कहते हैं कि एक जला हुआ दीपक ही दूसरे दीपक को जला सकता है अतः महर्षि क्योंकि स्वयं प्रज्जवलित थे इसलिये उनकी बातें अन्य लोगों के मन में घर कर जाती थी। मुंशीराम जी ने न केवल उनकी बातें सुनी अपितु चुपके–२ उनकी दिनचर्या भी देखी जो पता नहीं उनकी परीक्षा के लिये थी या जिज्ञासा के लिये। जब मुंशीराम जी ने कुछ प्रश्न ऋषिवर जी से किये, उनका यथोचित उत्तर भी उन्हें प्राप्त हुआ लेकिन समाधान होने पर भी युवक बोल उठा कि आपने तर्क से तो सिद्ध कर दिया कि ईश्वर है परन्तु मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वास्तव में ईश्वर है। इसका उत्तर भी अप्रत्याशित था। ऋषिवर बोले,'सुनो भाई, मैनें तुमसे यह कब कहा था कि मैं तुम्हें ईश्वर का विश्वास दिला दूंगा। तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दे दिये, विश्वास तो कभी समय आने पर स्वयं ईश्वर ही दिलायेगा। इस उत्तर ने तो उन्हें एकदम निरूत्तर ही कर दिया।

फिर समय भी आया, विश्वास भी जागा और ऐसा जागा कि पांच हजार साल से सोने वालों को झिंझोड़ कर जगा दिया। सारे व्यसन भी समाप्त हो गये, निरंकुशता भी समाप्त हो गई और जाग पड़े सुप्त पड़े वे उच्च संस्कार जो निश्चय ही किसी पूर्व जन्म के कर्मों का फल थे। ब्रह्मचर्य, निर्भयता, वैराग्य, त्याग, देश और धर्म की वह प्रबल भावना जो मनुष्य को निरन्तर ऊंचा और ऊंचा ही ले जाती है स्वामी जी के जीवन का अभिन्न अंग बन गई। जब व्यक्ति की दृष्टि निर्मल हो जाती है वह शरीर की अपेक्षा आत्मा के स्तर पर जीने की कला सीख लेता है तो उसके लिये केवल अपना सुख या दुःख अपना न रह कर दूसरों का सुख दुःख उसका हो जाया करता है। कांटा चाहे किसी के भी पांव में लगे, पीड़ा उसको होती है। यही दृष्टि हमारे युवक मुंशीराम को प्राप्त हुई और वे मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम बने और फिर स्वामी श्रद्धानन्द जी। एक के पश्चात् एक संसारिक वस्तु का वे त्याग करते चले गये, धीरे–२ अपना घर, परिवार सब कुछ समाज को अर्पित कर दिया। उनकी दृष्टि में कवेल अपने ही अपने न रहे अपितु पराये भी अपने हो गये। इस भावना के बिना आज तक कोई भी व्यक्ति न तो अपने आप को सामाजिक स्तर पर ऊंचा उठा सका और न ही कोई आदर्श स्थापित कर पाया। गुरूकुल की स्थापना कर उसे ऊंचे स्थान तक ले जाना, शिक्षा का प्रचार प्रसार करना, आर्य समाज का प्रचार करना अछूतोद्धार का कार्य करना, धर्म भ्रष्ट भाईयों की शुद्धि करके उन्हें पुनः वैदिक धर्म में लेकर आना, देश की स्वतन्त्रता हेतु आन्दोलन

www.thearyasamaj.org

करना, विधवाओं एवं अनाथों हेतु उचित व्यवस्थायें करना आदि उनके जीवन के इतने अधिक आयाम हैं कि जो गिनाये नहीं जा सकते। जहां कहीं पर भी आर्यों पर आपत्ति आती वे सदैव एक सशक्त प्रहरी की भांति खड़े दिखाई देते। कितने अवसरों पर उन्होंने भगवां वस्त्रों के ऊपर काला कोट डाल कर न्यायालयों में आर्यो की आन बचाई फिर चाहे वह पटियाला का राजद्रोह का अभियोग हो या कोई और। सत्य में वे कोई साधारण मनुष्य न थे अपितु एक अद्वितीय महापुरूष थे। हिन्दुओं की शुद्धि करके उन्हें पुनः वैदिक धर्म में लाने पर भी वे मुसलमानों के प्यारे थे यह क्या किसी आश्चर्य से कम है? दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से विशाल जन समूह को सम्बोधित करने वाले वे प्रथम और अन्तिम आर्य नेता थे। यह घटना उनके व्यक्तित्व की विशालता को सिद्ध करती है। यदि शुद्धि आन्दोलन के कार्य में रोड़ा अटका कर गांधी जी विवाद उत्पन्न न करते तो सम्भवतः पाकिस्तान का जन्म भी न होता। स्वामी जी इतने निर्भीक थे कि मुसीबतें उनसे डर कर दुम दबा कर भाग जाती थी। हम लोग मुसीबतों का सामना करने से कतराते हैं वे मुसीबतों को ढूंढते फिरते थे। रोलेट एक्ट के विरोध में जब दिल्ली के चांदनी चौक में जलूस का नेतृत्व करते हुए उन्हें अंग्रेज सरकार द्वारा रोकने का प्रयास किया गया तो वे डर कर भागने की अपेक्षा सीना खोल कर आगे जा खड़े हुए और ललकार कर कहा कि यदि साहस है तो चलाओ गोली। यह वह परीक्षा थी जिसमें संगीने हार गई और निहत्थे संन्यासी विजयी रहे। निश्चित रूप से यह शारीरिक शक्ति नहीं अपितु आत्मा की वह अमित शक्ति थी जो ईश्वर का वरदान है। इसको दबाने की शक्ति तो परमाणु बमों में भी नहीं है संगीनों की तो बात ही क्या है। उनका जीवन कोई दोहरे व्यक्तित्व का जीवन न था, छल कपट या राग–द्वेष का जीवन न था अपितु जो कुछ था वह जग जाहिर था। उनके जीवन के बारे में यदि जानना हो तो उनकी स्वयं की लिखी हुई 'कल्याण मार्ग का पथिक' श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति की 'मेरे पिता' और आर्य समाज का इतिहास, पुस्तकों का अवलोकन कीजिये।

क्या आज हम लोग, हमारे नेता, उपदेशक, आचार्य, प्रचारक उनके जीवन से तनिक भी प्रेरणा लेते है। नहीं, बिल्कुल नहीं। यदि ऐसा न होता तो आज आर्य समाज की वह दुर्दशा न होती जो इस समय है। पदों के लिये मारा मारी, विवाद, स्वार्थ की गंदी राजनीति और दिखावट के जीवन ने इस पावन संस्था को बरबाद करके रख दिया। आश्चर्य है कि लोग जातिवाद एवं प्रान्तवाद को आधार बना कर आर्य समाज का कार्य करना चाहते हैं। ऐसा क्या संभव हो सकता है? कदापि नहीं। वास्तव में ये लोग न तो आर्य समाज के प्रति कोई श्रद्धा रखते हैं और न ही उन्हें उसके कार्य से कोई लेना देना है। बस हमारी प्रतिष्ठा मान होना चाहिये, केवल हमारी ऐषणाओं की पूर्ति होती रहे इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। क्या स्वामी श्रद्धानन्द जी ने केवल पंजाब के लिये कार्य किया? क्या वे केवल पंजाब के थे? अपने आप को आर्य कहलाने वाले विचार करें। जब तक यह आत्म निरीक्षण न होगा तब तक कार्य सिद्ध होने वाला नहीं।

इच्छाएं बढ़ाती हैं व्याकुलता और बेचैनी

मानव जीवन आशाओं और आकांक्षाओं से सर्वदा भरपूर रहता है किन्तु समस्त इच्छाएं किसी की भी पूर्ण नहीं होतीं। मनुष्य की जितनी इच्छाएं बढ़ती हैं उतनी व्याकुलता, बेचैनी और अशांति बढ़ती जाती है।

वैसे मानव मन के एक कोने में शांति की भी इच्छा रहती है, सुख की भी कामना रहती है लेकिन शांति की इच्छा रखने से शांति नहीं मिलती बल्कि इच्छाओं के शांत होने से शांति मिलती है। सुख की कामना करने से सुख नहीं मिलता, उसके लिए उसी तरह का प्रयास करने से जीवन में सफलता मिलती है।

मनुष्य जितनी इच्छाओं के भंवर में भटकेगा उतनी ही उसकी व्याकुलता बढ़ती जाएगी। व्याकुलता से लोभ उत्पन्न हो जाएगा, लोभ से तृष्णा फलित होगी फिर इंसान छल–कपट की दुनिया में प्रवेश कर जाएगा और अंत में वह सिर्फ अंतहीन यात्रा का मुसाफिर बनकर ही रह जाएगा, जिसकी न कोई मंजिल होगी और न ही कोई उद्देश्य होगा। न ही उसका कोई लक्ष्य होगा और न ही उसकी कोई निश्चित दिशा होगी।

अंतिम समय में उसे पता चलेगा कि मैंने अपना अनमोल जीवन कंकर–पत्थर बटोरने में लगा दिया। मुझसे कहाँ, कैसे और क्या–क्या गलतियां हुई हैं।

इंसान उस समय रुदन करता है, अपनी किस्मत को कोसता है, अपना माथा पीटता है, कोई उससे उसकी आपबीती पूछे तो वह किसी को कुछ बताता नहीं, अगर कोई उसकी दुःख भरी कहानी सुनना चाहे तो किसी को वह सुनाता नहीं। उस समय उसके वक्त और हालात ऐसे हो जाते हैं कि वह न चाहते हुए भी दया का मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए समय रहते इंसान को चेतना चाहिए। जीवन में हर कोई कहीं न कहीं अभाव जरूर महसूस करता है किन्तु जो इंसान परमात्मा के प्रभाव को महसूस करता है उसे हर वक्त अपने अंग–संग महसूस करता है, वह कभी किसी भी तरह की परिस्थितियों के दबाव में नहीं आता बल्कि परिस्थितियाँ ही उसकी दास बनकर रह जाती हैं।

किसी को मुक्कमल जहाँ नहीं मिलता,
कहीं जमीं तो कहीं आसमां नहीं मिलता।

सौजन्य : पंजाब केसरी

www.thearyasamaj.org

वाणी का महत्त्व

♦नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', पंचकूला

वाणी का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है। वाणी से बोली गई भाषा वक्ता के भावों की संवाहिका होती है। वाणी द्वारा ही मनुष्य अपने भावों को दूसरे के मन में संप्रेषित कर सकता है। वाणी मनुष्य के चरित्र को दर्शाती है और मनोभावों का प्रकटीकरण करती है। वाणी से सुख और दुःख उपजते हैं और मनुष्य शांति और अशांति का सीधा संबंध मनुष्य की वाणी से होता है। तीरों तलवारों से लगे घाव समय के साथ भर जाते हैं लेकिन कटुवाणी से मन पर लगा घाव कभी नहीं भरता। इसका इतिहास प्रसिद्ध उदाहरण, द्रौपदी का व्यंग्य ''अंधों के पुत्र अंधे'' जिससे महाभारत के युद्ध की नींव पड़ गई थी।

इसलिए कहा जाता है कि मनुष्य को सदा तोल–मोल कर बोलना चाहिए। ऋग्वेद में मंत्र आया है ''सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमकृत।'' अर्थात् जैसे छलनी में छान कर सत्तू को साफ किया जाता है उसी प्रकार बुद्धिमान लोग ज्ञानरूपी छलनी द्वारा वाणी को शुद्ध करके प्रयोग करते हैं और हितैषी विद्वान् लोग हित की बातों को समझते हैं। उनकी वाणी में कल्याणप्रदा लक्ष्मी रहती है। इस वेदमंत्र में दो सामान्य सी घर की दैनिक प्रयोग की वस्तुओं सत्तू और छलनी की उपमा दी गई है। जिस प्रकार सत्तू को छलनी से छान कर तिनके रेत आदि इतर पदार्थों को निकाल दिया जाता है या फिर ना पचने के योग्य कर्कश अंश छान लिए जाते हैं और शुद्ध सत्तू जो कि रेत, कंकर आदि अन्य पदार्थों तथा मोटे अपाच्य पदार्थों से मुक्त हो जाता है वह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। इस उपमा का प्रयोग वाणी और बुद्धि जैसे सूक्ष्म उपमेयों के लिए किया गया है। वेदमंत्र बड़े स्पष्ट रूप से इस उपमा के माध्यम से संदेश देता है कि मनुष्य को वाणी का प्रयोग बड़ी सावधानी से बुद्धि की चलनी से छानकर करना चाहिए और कभी भी असत्य चाहे व प्रिय ही क्यों न हो जैसे इतर पदार्थों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साथ ही साथ अप्रिय कटु सत्य का प्रयोग करने से बचना चाहिए। जैसे काने को काना कहना चाहे, सत्य ही क्यों न हो, लड़ाई मोल लेने के समान है। कठोर शब्दों में कहे गए हितकर वाक्यों को सुनकर भी मनुष्य रुष्ट हो जाता है। कटु वचन क्रोध की अग्नि में ईंधन के समान उसे भड़का देते हैं जबकि विनम्र कोमल सत्य क्रोध की अग्नि पर शीतल जल के छींटे के समान होता है। इसीलिए कहा गया है ''सत्यम् ब्रूयात् प्रियम् ब्रूयात्'' अर्थात् सत्य बोलें, प्रिय बोलें किन्तु अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य ना बोलें। किसी के साथ व्यर्थ वैर और शुष्क विवाद न करें। प्रिय होने पर भी जो वचन हितकर न हो उसे नहीं करना चाहिए और हितकर बात चाहे सुनने में अप्रिय ही क्यों न लगे, अवश्य कह देनी चाहिए क्योंकि मलेरिया ज्वर की अवस्था में कुनीन की कड़वी दवा भी मीठी औषधि के समान होती है।

वाणी का संयम मनुष्य के जीवन का आभूषण है। व्यर्थ व अनुपयोगी बोलना भी अनुचित होता है। जो व्यक्ति उपयोगी और अनुपयोगी का अंतर समझ लेते हैं वह कभी व्यर्थ शब्द व्यक्त नहीं करते। महात्मा विदुर ने कहा कि कम बोलने से मन की शक्ति बढ़ती है। प्रश्न का समय पर उपयुक्त उत्तर देना आनन्द प्रदान करता है और उचित समय पर कही गई बात ज्यादा वज़न रखती है। सही कहा गया है कि पशु न बोलने के कारण और मनुष्य व्यर्थ कटु बोलने के कारण कष्ट उठाते हैं। जो व्यक्ति अपने मुख और जिह्वा पर संयम रखता है वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है। महात्मा गांधी ने कहा कि मौन से अच्छा भाषण दूसरा कोई नहीं, फिर भी यदि बोलना पड़े तो जहाँ एक शब्द से काम चलता हो, वहाँ दूसरा शब्द नहीं बोलना चाहिए। मौन का महत्त्व तो उस अज्ञानी से पूछा जो ज्ञानियों की सभा में जा बैठा हो। जो इंसान तोल मोल कर नहीं बोलता, उसे अक्सर कटु वचन सुनने पड़ते हैं। प्रत्येक स्थान और बोलने के योग्य नहीं होता कभी–कभी मौन वाणी से अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। इसीलिए कहा जाता है कि धैर्यपूर्वक सबकी बात ध्यान से सुनो परन्तु अपनी सलाह बिना मांगे मत दो और केवल थोड़े ही उन मनुष्यों को दो जो धैर्यपूर्वक सुनकर उनके कार्य करें।

मनुष्य की वाणी का मनुष्य जीवन में अत्यंत महत्त्व है। वाणी भाषा के माध्यम से भावों की संवाहिका बनती है। मनुष्य को सदा बुद्धि की छलनी कर प्रिय सत्य ही बोलना चाहिए। अप्रिय सत्य या प्रिय असत्य कभी न बोलें। शब्द का महत्त्व समझें और व्यर्थ शब्दों का प्रयोग कदापि न करें।

www.thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2018

बुक पोस्ट

सेवा में

पराकाष्ठा

♦महात्मा आनन्द स्वामी

महात्मा सुकरात बहुत बड़े विद्वान् और दार्शनिक थे। सारा यूनान उनका आदर करता था। परन्तु उनकी धर्मपत्नी थी क्रोध की साक्षात् मूर्ति। हर समय लड़ती वह, मीठा बोलना उसने सीखा नहीं था। प्रतीत होता था चीनी उसने कभी खाई नहीं। सदा कुनैन ही खाती रही। सुकरात घर पर मौन होकर बैठते तो वह चिल्लाना आरम्भ कर देती, ''हर समय चुप ही बैठे रहते हैं।'' वे कोई पुस्तक पढ़ते तो चिल्ला उठती, ''आग लगे इन पुस्तकों को! इन्हीं के साथ विवाह कर लेना था! मेरे साथ क्यों किया ?एक दिन वे आये तो पत्नी ने इसी प्रकार बकना–झकना प्रारम्भ किया। सुकरात के कुछ विद्यार्थी और भक्त भी उनके साथ थे। उन्होंने इस बात का बहुत बुरा माना, परन्तु सुकरात मौन बैठ रहे। पत्नी ने उन्हें मौन देखा तो उसका क्रोध का पारा और भी चढ़ गया और वह और भी ऊंची आवाज़ में बोलने लगी। सुकरात फिर भी चुपचाप बैठे रहे। पत्नी ने तब क्रोध से पागल होकर मकान के बाहर पड़ा हुआ गन्दा कीचड़ एक बर्तन में भरा, शीघ्रता से आकर सारा कीचड़ सुकरात के सिर पर डाल दिया। तब सुकरात हंसकर बोले, ''देवी! आज तो पुरानी कहावत अशुद्ध हो गई। कहावत है कि गरजने वाले बरसते नहीं, आज देखा कि जो गरजते हैं वे बरसते भी हैं।'' सुकरात हंसते रहे परन्तु उनका एक विद्यार्थी क्रोध में आ गया। उस विद्यार्थी ने चिल्लाकर कहा, ''यह स्त्री तो चुड़ैल है, आपके योग्य नहीं।'' सुकरात बोले, ''नहीं, योग्य है। यह ठोकर लगा–लगाकर देखती रहती है कि सुकरात कच्चा है या पक्का। इसके बार–बार ठोकर लगाने से मुझे भी पता लगता रहता है कि मेरे अन्दर सहनशक्ति है या नहीं।'' पत्नी ने ये शब्द सुने तो झट उनके चरणों में गिर पड़ी। रोती हुई बोली, ''आप तो देवता हैं, मैंने आपको पहचाना नहीं।'' यह तप की महिमा है। तप से और सहनशीलता से अन्ततोगत्वा मनुष्य को विजय प्राप्त होती है। बुरे व्यक्ति भी अपना स्वभाव बदल लेते हैं।

हृदय परिवर्तन

एक युवती नववधु बनकर ससुराल में आई, तो जो सास उसको मिली–हे मेरे भगवान्! दुर्वासा का अवतार। दिन में दो–तीन बार जब तक लड़ ने ले, तब तक भोजन नहीं पचता था। वधु आई तो सास ने सोचा–अब घर में ही लड़ लो, बाहर लड़ने के लिए काहे को जाना ?बहू को बात–बात पर वह ताने देने लगी, ''तुम्हारे बाप ने तुम्हें सिखाया क्या है ?तुम्हारी माँ ने तुम्हें क्या यही शिक्षा दी है ?तेरे–जैसी मूर्ख तो मैंने कभी देखी नहीं।'' बहू यह सब–कुछ सुनती और सुनकर मौन हो रहती। सास चिल्लाकर कहती, ''अरी! तेरे मुख में जीभ भी नहीं है ?'' बहू फिर भी शान्त बनी रहती। उसके मौन को देखकर सास का जिह्वारूपी घोड़ा क्रोध की सड़क पर द्रुत गति से दौड़ने लगता। प्रतिदिन ऐसा ही होता है। पास–पड़ोस के सभी लोग इस व्याधा को देखते, मन ही मन में सोचते–यह सास है या डायन ? एक दिन वह इसी प्रकार बहू पर बरस रही थी, बहू मौन थी। सास कह रही थी, ''अरी, पृथ्वी पर लात मारें तो वह भी शोर करती है और मैं इतना बोल रही हूँ फिर भी तू चुप है, तू तो मिट्टी से भी गई–बीती है।'' तभी एक पड़ोसिन ने कहा, ''बुढ़िया! लड़ने की बहुत इच्छा है, तो आकर हमसे लड़। तेरा चस्का पूरा हो जायेगा। इस बेचारी गाय के पीछे क्यों पड़ रही है, जो उत्तर भी नहीं देती ?'' वधु ने तुरन्त उठकर कहा, ''नहीं इन्हें कुछ भी मत कहिये। ये मेरी माँ हैं। माँ ही बेटी को नहीं समझायेगी तो फिर कौन समझायेगा ?'' सास ने यह बात सुनी तो लज्जित

आभार

प्रधान/मन्त्री, आर्य समाज, लोअर बाजार शिमला, जिला शिमला ने ₹ २०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।